मनुष्य बनो

शरण गति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

याल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३०	फाल्गुण सं० २०३६ वि० फरवरी, १९८०	संख्या ५

हुक्म

लेखक—दुर्गादास 'चमन'

हुक्म तेरा है सब पर जारी, क्या विषयी और क्या ब्रह्मचारी।
हुक्म तेरे में तीनों लोका, ब्रह्मा, विष्णु और है दुर्गा।
हुक्म तेरे ने पन्थ बनाए, डाकू, योगी सन्त कहलाए।
हुक्म तेरा है सब पर छाया, क्या देवी क्या इन्द्र राया।
हुक्म तेरे में भोग विलासा, कितना अद्भुत है यह तमाशा।
हुक्म तेरे में पवन व पानी, लकड़ी पत्थर तेरी निशानी।
हुक्म तेरे से राजा जोगी, तीर्थ पक्षी और हैं भोगी
हुक्म तेरा है काल और दयाल, सब जीवों पर हुक्म की चाल
हुक्म हैं कर्म और हुक्म है संगत, हुक्म है गुण और हुक्म है रंगत
हुक्म से कोई ब्रह्म को जाने, ब्रह्माकार यह सृष्टि मानें
हुक्म में पाँचों शब्द हैं तेरे, असंख पुरुष शब्दों ने घेरे
हुक्म में सूक्ष्म कारण सारा, रचना का बेअन्त पसार
हुक्म में काग और हंस बनाए, हंस की महिमा सन्त भी गा
'चमन' तेरा इक हुक्म पहचाने, काग हंस को सम कर जा
सतगुरु कर कृपा इक भारी, हुक्म की रंगत हो जाए तार

पादकीय—

की इन्तजार के बाद दिनांक १७–२–८० को परम पूज्य दयाल पं०
द जी महाराज गाड़ी समय से लेट हो जाने के कारण करीब १०-३०
इन्डिया से अलीगढ़ पधारे एवं वहाँ से इण्डेन गैस गोदाम पर जहाँ
ठहरने का प्रबन्ध किया गया था कार द्वारा रवाना हुये। यहाँ पर
ो से उनके आने का इन्तजार कर रहे थे। महाराज जी लम्बे सफर
के कारण काफी थके हुये होने के बाबजूद भी सभी को दर्शन शुभा
एवं अमूल्य प्रवचनों के भण्डार से आनन्दित किया उसके बाद व
चले गये।

ज जी ने अलीगढ़ में तीन सत्संग दिये जिनमें आपने अलग
अपने अनुभव के आधार पर संसारी जीवों को जीने का, सुख से
ा करने का एवं परमार्थ कब और किसके लिए है, पर सतसंग
ं कुछ प्रमुख बचन इस प्रकार थे। युवा वर्ग को अपने जीवन को
द्धशाली बनाने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अति आवश्यक है।
पालन करने के बाद सुमरन और ध्यान की आवश्यकता है
ा इच्छा शक्ति प्रवल हो सके और आपकी अपनी सांसारि
ा होती रहे।

तक इन्सान को पेट में रोटी नहीं मिलेगी तब तक वह भजन
र्थ क्या करेगा।

उन्होंने अभ्यासियों एवं पुराने सतसंगियों को आगे बढ़ने के
कया।

अलीगढ़ की तरफ से बाहर से आने वालो की ठहरने एवं
पूर्ण व्यवस्था की गई थी जिसकी सभी सतसंगी भाइयों ने
की और महाराज जी के द्वारा की गई अमृत वर्षा का सच्चे
एवं दिनांक १९-२-८० को सुबह महाराज जी के विलारी
अपनी राह ली।

आश और विश्वास, दृढ़ निश्चय

अज्ञानियो ! हम सबके सब मालिके कुल के घर से आये हैं। राधास्वामी मत वालों, नानक या कबीर पंथियों ने, हिन्दुओं ने, या औरों ने उसका कुछ ठेका तो नहीं लिया या कैद में तो नहीं कर रक्खा। वह मालिक हमारा है। हमें अपने पास लिये बिना वह जायेगा कहाँ ? केवल आश और विश्वास रखो। उसकी शक्ति ही नहीं कि हमें न ले जाय। सुनो ! इसी क्रम में दाता दयाल जी की एक कहानी सुनाता हूँ—

एक राजपूत की कन्या थी जिसका नाम तारामती था। उसके पिता ने एक राजपूत नवयुवक से उसकी सगाई कर दी। परन्तु उस राजपूत ने अपना विवाह न कराया और घर से भाग निकला। बाहर जाकर उसने कहीं नौकरी कर ली। लड़की चिन्ता में रहने लगी। उससे पूछा गया 'अब क्या होगा ?' उसने कहा—'मेरी मँगनई जिससे हो गई, हो गई।' मैं तो अपने को उससे विवाहित स्वीकार करती हूं और वह भी इस कारण कि मैं एक प्रसिद्ध आदरणीय राजपूत कुल में से हूँ। मैं समझती हूं कि मेरा पति मुझे अवश्य मिलकर रहेगा।

कुछ दिवस पश्चात एक राजा इसी नगर में आ निकला। जहाँ तारामती रहती थी। उसने तारामती की सुन्दरता, लावण्य और दूसरे गुणों की प्रशंसा सुनी। बस फिर क्या था ! लट्टू हो गया। उसने अपनी कामना इस लड़की से विवाह करने की प्रकट की। लड़की बोली—'भला अब मैं कैसे किसी के साथ विवाह कर सकती हूं, जब मेरा पहिले ही विवाह हो चुका है। मुझे विश्वास है कि मेरे पति देव आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, मास, वर्ष, १० वर्ष एवं २० में अवश्य मुझे मिल जायेंगे। और यदि न मिले तो न सही अगले जन्म में मेल हो जायगा। राजा के मन पर इसकी बातों का बहुत प्रभाव हुआ। अतः तारामती को उसने अपनी बहिन बना लिया, और उसके पति की खोज का आश्वासन दिया। ढूंढ़ते २ वह वहाँ जा पहुँचा जहाँ उसका पति रहता था। और उस मण्डली में प्रवेश किया जहाँ वह उठता बैठता था। वहाँ सब मिलकर आपस में एक दूसरे को कहानियाँ सुनाया करते थे। इस

राजा ने जो भेष बदले हुआ था कहानी सुनानी आरम्भ की। वही इस लड़की की सगाई के सम्बन्ध में। उससे राजा का मिलाप। लड़का की अस्वीकिता आदि आदि। इस भेष बदले हुए राजा ने ऐसे रोचक ढंग से कहानी सुनाई कि वह लड़का रो पड़ा और अपनी त्रुटि को स्वीकार किया। अतः इस राजा ने फिर अपना वृतान्त स्पष्ट शब्दों में सुनाया। और उस लड़के को लेकर तारामती के नगर को चल दिया। नगर के निकट पहुँचने पर इन्हें एक प्रिय स्वरों में गाने की ध्वनि सुनाई दी। वास्तव में वह लड़की मस्ती में गा रही थी। 'पिया आयेंगे। पिया आयेंगे। इस पर उसके भाई ने (भेष बदले हुए राजा ने पुकार की) 'बहिन तेरा पिया ढूँढ़ लाया।' यह सुनते ही वह प्रसन्नता के मारे बेसुध हो गई। तत्पश्चात इन दोनों का विधि पूर्वक विवाह सम्पन्न हुआ। देखिये इस कहानी से कैसी महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है जिसे केवल समझने वाले ही समझ सकते हैं।

हो इरादा मुस्तकिल, यकसू रहे दिल का ख्याल।
फिर नहीं हरगिज कमी, कोई यहाँ अमरें मुहाल॥

—०—

चाह, लालसा, चेष्टा

प्रत्येक समय स्त्री पुरुष नहीं मिलते परन्तु दोनों के भीतर एक दूसरे से मिलने की चाह बनी रहती है। यह प्रसन्नमय दशा है। इसी प्रकार मानवीय आत्मा को उस मालिक के दर्शन एवं मिलाप की लालसा होनी चाहिये। दिन प्रतिदिन खाँड़ खाने को न मिले न सही जो आनन्द संसार के विषय विकार, भोग विलास में मिलता है वैसा ही आनन्द अभ्यास के समय भजन में मिलता है। स्मरण रहे कि जो व्यक्ति अधिक शारीरिक आनन्द भोगते हैं, वह शीघ्र ही इस संसार से चल बसते हैं। इसी प्रकार जो अधिक साधन और अभ्यास करते हैं वह भी दीर्घ आयु वाले नहीं होते। यह सत्य है जो मैंने कहा है। यही प्रकृति का नियम तथा सिद्धान्त है इसलिये गुरू की आज्ञा में रहना अनिवार्य बताया गया है —जो तुम उसकी खिदमत बजा लाओगे तो खादिम से मखदूम बन जाओगे।

प्रवचन

परमसन्त परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

गुरु मुख बिन जाने नहीं कोई, गुरु का भेद अपारा ।
कहन सुनन की बात नहीं है, पोथी ग्रन्थ से न्यारा ॥
नहीं यह ज्ञान न योग की किरिया, नाहीं विवेक विचारा ।
घट में चढ़ कर सुने शब्द धुन, सहसं कमल मँझारा ।
फिर त्रिकुटि के महल में बासा, परसे पद ओंकारा ॥
सुन्न शिखर पर आसन मारे, त्यागे मर्म विकारा ।
महा सुन्न में लगी समाधी, सूझे अपर अपारा ॥
भँवर गुफा सोहंगम दरसे, जगमग जोत उजारा ।
सन्त धाम में सतगुरु दर्शन, पावे गुरु मुख प्यारा ॥
अलख अगम की गति गम निरखे, लख अखंड पसारा ।
भक्ति युक्ति के प्रेम से पहुँचे, राधास्वामी के दरबारा ॥

राधास्वामी ! मैं कल अर्थात एक दिन पहले सवा दो महीने के बाद दौरे से वापस आया हूं । दो आदमी कहने लगे कि हम सत्संग सुन कर जायेंगे । पहले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या मैं सत्संग कराने का अधिकारी हूं ? ये बाणियाँ पढ़ी । आयु व्यतीत होगई । मैंने जो कुछ समझा वह कहता हूँ ।

मैंने यह समझा है कि जितनी वाणियां रची गई हैं ये सब रोचक हैं, यथार्थ नहीं है । यह वर्णन शैली लोगों को आकर्षण करने के लिए हैं जिस प्रकार गाने वाले रेडियो पर गाते हैं कि मैं 'चाँद का टिक्का लगाऊँगी, तारों के बुन्दे पहनूँगी । और हवा (वायु) की चुन्नी ओढ़ूँगी, तो यार को मिलने

ाऊँगी। ऐसे ही इन सन्तों ने रोचक और भयानक बातें कहीं हैं। इन रोचक ौर भयानक बातों में यह आकर्षण है कि इनसे लोग खिंच जाते हैं। जैसे म छोटे बच्चों को कहते हैं कि अगर तू मिडिल पास कर लेगा तो तुझे ाइकिल देंगे अगर फेल होगया तो घर से निकाल दिया जायेगा। मैंने क्या मझा ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। गुरु मुख किसे हते हैं ? यह दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल महाराज की वाणी है—

गुरु मुख बिन जाने नहि कोई, गुरु का भेद अपारा।

पहली बात यह है कि अगर कोई आदमी गुरुमुख नहीं है और मेरी ताबों को पढ़ता है तो उसे कोई लाभ नहीं होगा जब तक वह भेद को नहीं ानता। भेद किसने जानना है ? मैंने जो समझा है वह कहता हूं कि प्रकृति भेद का किसी को भी पता नहीं लगा। कितनी आकाश गंगा कितने सूर्य र लोक लोकान्तर हैं। क्या इनकी गिनती हो सकती है ? कौन ऐसा दमी है जो यह कह सके कि मैं सारे संसार के हाल (दशा) को जानता हूँ एक दूसरे के मन की दशा को नहीं जानते। किसी हद तक अनु- ा लगाते हैं वह कभी ठीक और कभी गलत होता है। फिर गुरु मुख कौन और वह भेद क्या है ?

संसार का भेद तो मिलता नहीं लेकिन अपना भेद मिल जाता है कि मैं हूं। मुझे अगर शान्ति, उत्साह, हिम्मत या जो कुछ भी मेरे पास है अपने आपको जानने से है। मैं राम को मिलने के लिए निकला था। मंगला चरण के शब्द में आया है—

मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले॥

अगर मैंने संतमत से कुछ पाया है तो शान्ति पाई है। संसार संसार के फिरता है। जहां मैं जाता हूँ कोई आदमी भी ऐसा नहीं होता जो की इच्छा लेकर नहीं आता यह आदमी हैदराबाद से आया है इसे कष्ट है। मैंजर साहिब को अपना कष्ट है। किसी के बेटा नहीं,

किसी का बेटा बीमार है, किसी के पास धन नहीं है, किसी की स्त्री तंग करती है और किसी का पति तंग करता है। इस संसार की यह दशा है। गुरु, क्या देता है ? मैं यह नहीं कहता कि स्वामी जी लोगों को क्या देगये या और गुरु क्या देते हैं और दाता दयाल क्या देगये ? मुझे जो कुछ मिला और जो कुछ मैं दे सकता हूँ वह मैं देता हूं। मगर जो कुछ मैं देना चाहता हूँ उसे कोई लेना नहीं चाहता। लोगों को शान्ति की आवश्यकता नहीं है। गुरु शान्ति देता है। लोगों को संसार के काम चाहिये।

यह जो कुछ हमें तुम्हें संसार में मिलता है ये हमारे तुम्हारे अपने किये हुए कर्म हैं। मैं अढ़ाई महीने के बाद दौरे से वापिस आया हूँ। यही कह कर आया हूँ कि राम राम जपने से अपने कर्म को ठीक करना हजारहा दर्जे अच्छा है अर्थात उलटी बात कहकर आया हूँ। किसी ने आज दिन तक यह नहीं कहा। सब धर्म वाले कहते हैं कि खुदा को याद करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा मैं कहता हूं कि खुदा तुम्हारा रक्षक हो ही नहीं सकता जब वह सन्तों का न हुआ जिन्होंने सारी आयु रब रब जपा। उन्हें क्या क्या कष्ट आये। इन बड़े बड़े गुरुओं महात्माओं के साथ क्या हुआ इतिहास को पढ़ो। यह समझ में नहीं आता कि हकीकत क्या है ? हकीकत यही है कि इन्सान अपने आपको जाने। मैंने आपको जानने का यत्न किया। जब तक तो राम को ढूँढने के निकलता रहा तब तक मैं बेचैन रहा क्योंकि जब तक कोई इच्छा बाकी है है तब तक बेचैनी है। जब तक हमारे अन्तर किसी चीज कीं चाह है तब तक हमें बेचैनी है। जब इच्छा नहीं रही तो कैसी बेचैनी। मैं राम को मिलने निकला था, राम की इच्छा थी, सारा जीवन बेचैन रहा। तुम लोग भिखारी बनकर माँगने के लिए आते हो लेकिन हम दानी बन कर जाते थे तुम्हारे और हमारे में क्या अन्तर है ? लाखों कोस का अन्तर है। लोग सत्गुरु के पास कुछ मांगने के लिए जाते हैं। हम माँगने के लिये नहीं जाते थे, हम तो प्रेम करने के लिए जाते थे या उस घर को देखना चाहते थे जो राधास्वामी मत कहता है। मैंने दो बार के सिवा कभी कुछ नहीं मांगा। या दो बार के सिवाय मैंने कुछ नहीं मांगा। मुझे शान्ति कहां से मिली ?

मंगलमय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले ।

दाता कहते हैं कि गुरु के चरन तीन तापों को हरने वाले हैं । मैं पूछता हूँ कि कितने आदमी हैं जो मेरे पांव को धो धो कर पीते हैं या अपने गुरुओं के पॉव धो धो कर पीते हैं, क्या इनके तीन ताप चले गये ? यह एक प्रश्न है । यहाँ कृष्णा बैठी हुई है । इसने बाबा सावनसिंहजी से नाम लिया था । इसने उनकी बहुत सेबा की । यह बाबा जगतसिंह के पास भी गई । बाबा चरणसिंह के पास भी गई और गैर पास भी आता है । क्या इसे शान्ति मिल गई ? गुरु के ये चरण नही हैं, गुरु के चरण प्रकाश हैं । जो आदमी अपने अन्तर प्रकाश का साधन करता है उसके तीन ताप हरते हैं । तीन ताप क्या ाया हैं ? शारीरिक बोध भान शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अज्ञान के ख ईश्वर परमात्मा कहां है ? इस प्रकार की तलाश आत्मिक दुख कहलाती । ये कब समाप्त होते हैं ? प्रकट तुम देखो, जब तुम्हारा औपरेशन होता , तुम गहरी नींद में चले जाते हो, तुम्हारा शरीर कटा हुआ है, क्या म्हें पता होता है ? नहीं । क्योंकि क्लोरोफार्म के प्रभाव से तुम शरीर से पर चले जाते हो । वह शरीर का ताप कब कब हरता है ? जब तुम शरीर अलग हो जाओ । यह नामदान क्या है ? शरीर से अलग होने का नाम नामदान' है—

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सतनाम सतगुरु गत चीन्हा ।

कई आदमी कहते हैं कि 'नाम' 'पांच नाम' हैं, कोई कहता है राधास्वामी , कोई कहता है ओ३म् तत सत नाम है । मैं कहता हूँ यह सब झूठ है । ह बच्चों के लिए है । जिस प्रकार बच्चों को स्कूल में पहाड़े पढ़ाये जाते हैं गर उन्हें पहाड़े नहीं आते तो वे आगे नहीं जासकते । जब तुम्हें गहरी नींद ाजाती है तो क्या तुम्हें तीन ताप रहते हैं ? मगर वहाँ बेहोशी है । बेहोशी ी दसा में तीन ताप तो चले जाते हैं मगर भान नहीं होता । इस वास्ते गुरु चरण प्रकाश हैं । यही सनातन धर्म कहता है कि प्रकाश सावित्री का ाधन करो जो आदमी सारा जीवन किसी गुरु के चहरे का ही ध्यान करते ते है वे तीन ताप से नहीं छूट सकते । गुरु का चेहरा गुरु के चरण नहीं

DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

हैं। राधास्वामी मत में हजूर महाराज राय सालिगराम साहिब ने साफ लिखा
है कि गुरु के चरण प्रकाश हैं और गुरु शब्द स्वरूप है। बाहर के गुरु का
कर्तव्य है कि जीव को शब्द और प्रकाश में लगादे। मैंने इतना समझा है।
अगर किसी ने इससे अधिक समझा हो तो वह जानता होगा। मुझे पता
नहीं। मेरा चार दिन का जीवन है। मैं हेराफेरी करके इसे बरबाद करके
नहीं जाना चाहता। जो पिछले जन्म के कर्म हैं उनका दुख भोग लूँगा।
अब चार दिन के जीवन के लिए क्या पाखण्ड लगाऊँ। मैंने मरजाना है, क्या
किसी ने मेरे साथ जाना है ? यह माई मेरे पीछे पड़ी रहती है। मेरी जान
खाती है। इसे अपने ही अज्ञान का सहारा मिलता है। अगर मैं इसके घर
का कुछ खाजाऊँ तो मैं मर गया मेरा तो कुछ नहीं रहेगा। मैं दो महीने
बाहर लगाकर आया हूँ, जो किसी के घर खाकर आया हूँ उसके बदले अपनी
ओर से पिचत्तर रुपये मन्दिर में दिये है। कई जगह किसी शकल में रुपये
दे भी आया है। मेरी समझ में नहीं आता कि जो गुरु लोग चेलों से धन
लेते हैं उनका क्या परिणाम होगा। मैंने परिणाम देखा भी है। दाता का
परिणाम देखा यद्यपि उन्होंने स्वयं नहीं खाया मगर धाम उजड़ गई। वह
अज्ञात रहे। जिनके लिए उन्होंने काम किया वे दस नम्बर के बदमाश निकले
और बड़े बड़े गुरुओं की दशा देखी तो मैं डर गया।

आपने कहा कि सत्संग सुनकर जायेंगे। आप जो मेरे पास आये हो क्या
परमार्थ के लिए आये हो ? सब झूठ है, आप तो अपने संसारी सुखों के लिए
आये हो तुम्हें संसार का सुख तुम्हारे कर्म अनुसार मिलेगा। जैसा तुमने
किया हुआ है और जैसा तुम करोगे। क्योंकि विचार में शक्ति है इसलिये
मैंने शिक्षा को बदल दिया। घरों में प्रेम रखो, मानसिक और शारीरिक
ब्रह्मचर्य रखो आजकल हम खुदरो संतान पैदा करते हैं वह खुदरो संतान
तुम्हारे लिए कैसे सुख का कारण बन सकती है। मुझे कोई आदमी तो बताये
कि क्या वह केवल सन्तान पैदा करने के लिए स्त्री के पास जाता है ? वह
तो अपने स्वाद के लिए जाता है जो लड़के स्वाद के पैदा होते हैं, उनसे कैसे
... नियन्त्रण में रहेंगे जब हम

स्वयं नियन्त्रण में नहीं रहे। मैंने भी ऐसी खुदरो सन्तान पैदा की थीं मगर मालिक ने बड़ी दया की कि वह मरगई। मैं यह शिक्षा बदलना चाहता हूँ। तुम लोग आये हो, अच्छी सन्तान पैदा करो और अगर तीन तापों से बचना चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश का साधन करो। जब तक कोई आदमी प्रकाश का साधन नहीं करता, वह लाख किसी गुरु का ध्यान करे, उसमें रिद्धि सिद्धि आजायेगी, उसके काम पूरे होजायेंगे, यह ठीक है मगर उसके त्रताप नहीं जासकते। त्रताप क्या हैं ? शारीरिक कष्ट, मानसिक गलत विचार और अज्ञान। ये तीन ताप हैं। यह दाता दयाल ने कहा है। बाणी रोचक है। अगर ऐसे ही कह देते जैसे मैंने कहा तो फिर गद्दी कौन बनाता, इन गुरुओं की गद्दियें कैसे बनतीं, उन्हें धन कहाँ से आता, उन्हें मत्थे कौन टेकता अगर वे सच्ची बात बता देते। हजूर महाराज राय सालिगराम साहिब भी लिख गये कि गुरु के चरण प्रकाश हैं मगर पब्लिक में यह नहीं कहा। क्योंकि अगर ऐसा कह देते तो पब्लिक कैसे आये, धन कौन देगा और कौन मत्था टेकेगा। अगर आज गुरुपने में मत्था टेकना और पैसा न होता तो कोई गुरु बन जाता तो मुझे कहते। मेरे साहिब हम सब स्वार्थी हैं। मैं अब बाहर गया था। क्या मैं किसी पर उपकार करने गया था ? मैं अपना कुछ कर्तव्य सच्चाई से पूरा कर आया हूँ और मन्दिर के लिए कुछ पैसे ले आया हूँ। ये मेरे अपने ही खोटे कर्म थे जो मैंने कहा था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। इसलिए सैंटर की आवश्यकता थी और दूसरे मैंने अपनी मूर्खता से दाता दयाल का (Statue) बना लिया था जिसके रखने के लिए जगह चाहिये थी। मैं भी फँसा हुआ हूँ। मैं भी बरी नहीं हूँ। मगर मैं बात को जानता हूं इस वास्ते दुख सहता हुआ भी सुखी रहता हूँ। पन्द्रह दिन से बुखार आरहा है, जुकाम है, गला भारा है मगर ऐसी दशा में भी जो मैंने कर्म किये हुए हैं उन्हें भुगतना है।

मैंने बताया कि गुरु ऐसे तीन ताप हरते हैं। आप जो मेरे पांवों को मत्था टेकते रहते हो या अपने गुरुओं के पांव को धो धोकर पीते हो, यह व्यर्थ है। हां एक कल्पित खुशी मिलेगी मगर तुम्हारे तीन ताप नहीं जा सकते। यह

माई बहुत मत्थे टेकती है क्या यह सुखी है? अपने दिल से पूछो। किसी समय वह लड़ पड़ती है तो कहती है कि मैं चली जाती हूँ। फिर तीन ताप कहां गये ?

भव सागर अति अगम, पंथ नहीं सूझे कोई।

भव सागर अर्थात मन के अन्तर जो विचार उठते हैं ये इतने शक्तिशाली हैं कि किसी को कोई दुख, किसी को कोई दुख तो किसी को कोई दुख। यह बात मेरी समझ में आई है। मुझे अगर राधास्वामी की समझ आई है तो आप लोगों से आई है। आप इस आयु में मेरे सच्चे सच्चे सत्गुरु हैं। जब से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास होगया कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरता है यह मेरा अपना ही विचार है। अगर सच्ची नीयत है तो स्वप्न सच्चा हो जायेगा अगर नीयत बुरी है तो बुरा स्वप्न आजायेगा या बुरी बात हो जायेगी। यद्यपि मैं अभी तक मंजल पर सदा के लिए नही ठहर सकता मगर मुझे मार्ग का पता लग गया है कि यह मार्ग है। लोग गुरुमत में शामिल है। मैं इस बार बाहर दौरे पर कहकर आया हूं कि इन गुरुओं ने हमें लूटा है। इन गुरुओं के आगे मत लुटो। अगर ये लड़कों को मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखना बतावें तो कितने आदमियों के जीवन अच्छे हो जाते मैंने आपको एक दिन पहले उदाहरण दिया कि सरसो-हेडी में एक नौजबान लड़का आया। उसका बाप मर गया है मन्दिर उसके बच्चों को दस रुपये मासिक देता है। अबकी बार भी सौ रुपये देकर आया आया हूं। वह बी०ए० में पढता है। उसबे मेरी कोई किताब पढ़ी और वह पागल होगया। कहने लगा कि जो कुछ है बाबा फकीर है। ऐसी वैसी ऊट-पटांग बातें करने लगा। सब घरवाले दुखी हुए। मेरे पास आया तो कहने लगा कि तू अन्तरयामी है तू ऐसा है, तू ऐसा है। मैंने लड़के को देखकर पूछा कि सच कहना। उसने कहा कि सच कहूंगा। मैंने कहा कि तू अपने हाथ से अपना ब्रह्मचर्य नहीं खोता ? कहने लगा खोता हूं। वह जो अपना ब्रह्मचर्य छोटी आयु में खोता है वह उसके अन्तर कमी है। जब उसने मेरी किताब में कहीं उत्साह की बात पढ़ी तो उस कमी के कारण उसके अन्तर यह चीज

महसूस हुई। मेजर साहिब मेरे पास आये हैं इनमें क्या कमी है ? इनका लड़का बीमार है। मैं भी Feel करता हूं। अगर मेरा लड़का हो तो क्या मैं Feel नहीं करूंगा ? मैं अवश्य Feel करता हूं। मगर यह क्यों आये हैं ? इसलिए कि शायद बाबा कुछ करनी वाला हो तो मेरे लड़के को स्वस्थ करदे स्वस्थ होना या न होना यह प्रालब्ध कर्मों के अनुसार है या मानव के अपने विश्वास अधीन है। इनका विश्वास इतना काम नहीं करेगा अगर लड़के का विश्वास नहीं है। लोग मुझ पर विश्वास करते है। मैं कुछ कह देता हूं तो पूरा हो जाता है। क्या मैं करता हूं ? उनका विश्वास काम करता है और कुछ प्रालब्ध।

मैं तो इस समझ से तीन ताप से निकलता हूँ। मगर अब भी फँस जाता हूं मगर जब से गुरु के चरण पकड़े हैं तो निकल जाता हूं। गुरु के चरण प्रकाश हैं। इसलिए हमारे हिन्दू शास्त्र गायत्री का मंत्र बताते हैं। तुम लाख बाबे फकीर, स्वामी जी या राम का ध्यान करते रहो तुम्हारा आवागवन नहीं जायेगा। तभी तो स्वामीजी ने कहा है।

धर्मी भूले, ज्ञानी भूले ध्यानी भूले

ऐसी ऐसी बाणियां सुन कर मैं रोया करता था कि मैं कहाँ फँस गया कि ध्यानी, ज्ञानी सब भूल गये क्या बात हुई ? अब मैं समझता हूँ कि ठीक भूल गये क्योंकि तुम किसका ध्यान करते हो ? किसी आदमी का ध्यान करते हो ना। जब तक तुम किसी आदमी से प्रेम रखोगे जब मरोगे तो तुम्हारा वजन (तोल) होगा विज्ञान ने सिद्ध किया है। जब बजन (तोल) होगा तो लाख तुमने शब्द अभ्यास किया हुआ है अगर अन्त समय में तुम्हारा प्रेम किसी भी स्थूल वस्तु से होगा तो तुम्हें Gravity of Earth ऊपर नहीं जाने देगी यह मेरी Reading हैं, मैं कोई दावा नहीं करता दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना, मैंने जो स्वयं अनुभव किया वह कहता हूं।

त्रे ताप हरने वाले कौन ? गुरू, उन्होंने क्या किया ? उन्होंने मुझे नाम दिया। मेरी समझ में नहीं आता था कि नाम क्या है। मैं तो उनको ही जफ्फा मारे बैठा था यही समझता कि लाहौर या धाम से जो कुछ करते हैं

वही करते हैं। अब आंख खुली तो पता लगा कि वह कुछ नहीं करते थे। उन्होंने तो मुझे ज्ञान बताने का एक ढंग तरीका बताया था। केवल मेरा या किसी गुरु का ही ध्यान करने से तुम्हें सिद्धि शक्ति मिल जायेगी, सँसारी काम बन जायेंगे मगर आबागवन से बिलकुल बचाव नहीं हो सकता और यही बाबा सावनसिंहजी महाराज फरमाया करते थे कि जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मछलियां बनेंगे। अब जिन्हें जहां से प्रेम है वे मरकर वहीं जायेंगे। उसूल तो एक ही है। यही हुजूर महाराज राय सालिगराम साहिब ने भी कहा है कि अन्त समय फिल्म चलती है, गुरु भी आजाता है जिससे नाम लिया हुआ है। वह बाहर का गुरु नहीं आता सब पाखण्ड का जाल है। जिन गुरुओं ने ऐसा कहा उन्होंने हमें मूर्ख बनाकर लूटा है। मेरे सामने सब गुरुओं ने माना है कि वे कहीं नहीं जाते। लोग मर जाते हैं। उनके अन्तर अपने अपने गुरुओं का रूप प्रकट होता है और वह रूप उन्हें लेजाता है मगर इन गुरुओं को कोई पता नहीं होता। मेरे सामने सब ने माना मगर यह बात पब्लिक को नहीं कहते। क्योंकि अगर यह बात पब्लिक को कहदें तो डेरा कौन बनाये, धर्न कहां से आयेगा।

भव दुख सकल मिटाय, शान्ति पद देने वाले।

मुझे कहां शान्ति मिली ? मुझे पता नहीं कि दाता दयाल का क्या भाव है। गुरु कैसे शान्ति देते हैं ? मैं नहीं जानता में फूंक नहीं मार सकता। मुझे तो तुम लोगों ने शान्ति दी। आप मेरे गुरु है। जब आप लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है, स्कूल में पर्चे हल करवा देता है, बीमारों को दवाई बता देता है और मैं नहीं होता तो मैं इस बात को मानने के लिए विवश होगया कि जो कुछ मेरे अन्तर पैदा होता है यह मन अथवा काल है। जब इसे छोड़ जाता हूँ। तो आगे प्रकाश और शब्द रह जाता है। फिर उस चीज की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। दो तीन महीने बाद कभी किसी समय कोई (Chance) हो जाता है जब प्रकाश और शब्द को छोड़कर अशब्द गति में चला जाता हूँ। वहां न मैं, न तू, न

गुरु, न राम, न कृष्ण हैं अर्थात वहाँ कोई चीज नहीं। मैं उसे नफी नहीं कह सकता। कुछ है, मगर अपनी होश नहीं। फिर मैं क्या हुआ ? क्या मैं कुछ बन गया ? अगर कुछ बन गया होता तो अपनी खांसी और जुकाम को ठीक कर लेता। मुझसे लोग रुपया नोट पर दस्तखत (हस्ताक्षर) करवा लेते हैं, वे कहते हैं बाबा ! हम बड़े अमीर होगये। अगर मेरे ही बश में होता तो मैं भी अमीर हो जाता यह सब तुम्हारा विश्वास काम करता है।

घरों में शान्ति रखो। तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। जो कुछ तुम चाहते हो उसकी प्रबल इच्छा रखो। मत लो, हिम्मत से काम लो, संसार में उन्नति कर जाओगे। वह भी किसी सीमा तक। आखिर उन्नति की भी कोई सीमा होती है। मेरी दाढ़ी के बाल हैं. जितने मैंने कांटे हैं अगर इन सबको इकट्ठा किया जाये तो यहां से वहाँ तक कितने लम्बे बाल होजायेंगे। मगर यूं अगर मैं दाढ़ी को न भी कटाऊँ तो एक हद (सीमा) से अधिक तो नहीं जीयेंगे, कोई पांव पर तो जाकर नहीं पड़ेगी। आप लोग आये हैं।

I want to true remain true to my conscience

मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि जिस इच्छा को लेकर तू या मेजर साहिब आये हैं वह पूर्ण हो। अगर आप लोगों के विचार में शक्ति है तो मेरे बिचार में भी शक्ति है। जब लोग अपने विचार से मुझे बनाकर काम लेलेते हैं तो इससे सिद्ध हुआ कि मानव के दिल में शक्ति है। जो विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं। जो बिश्वास नहीं करते उनके काम नहीं होते। मगर अगर मैं तुम लोगों के घरों का खाजाऊँ तो तुम्हारे जितने (अवगुण) इच्छायें सब मुझे लेने पड़ेंगे। इस वास्ते कहा जाता है कि जो सच्चा प्रेमी हो अपि अज्ञानी हो उसका सन्त निरादर नहीं करते। रामचन्द्रजी ने भीलनी झूंठे बेर खाये थे क्योंकि उस भीलनी में सचाई थी। उसके बेरों में अमृत वह रामचन्द्रजी को अमर कर गया। लक्ष्मण ने पिछली ओर फेंक दिये इस वास्ते प्रेम एक और चीज है मगर सब आदमी प्रेम के लिए चीज देते संसार तो अपने स्वार्थ के लिए देता है। प्रेम में किसी प्रकार की नहीं होती। प्रेम माँगता नहीं है। मां बच्चे के लिए कितना कष्ट

उठाती है यद्यपि समय बाद शायद इच्छा हो कि बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा वह कितना परिश्रम करती है। मैं आप सब से निष्काम प्रेम करता हूँ। संसार का व्यवहार है। व्यवहार के रिस्ता से व्यवहार के साथ बोलता हूं।

मैंने तो यह समझ लिया कि मैं कौन हूँ। मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। वह मालिक वे अन्त है। उसका तो मुझे अन्त नही मिला। शायद कबीर साहिब, नानक साहिब या दाता दयाल को मिला हो। कहने को तो सब कह गये कि उसकी लीला अपरम्पार है मगर किसी ने जाना नहीं। आप आजाते हैं। आपको क्या उपदेश करूँ, अपने आपको समझाता रहता हूँ कि फकीरचन्द ! शुद्ध व्यवहार करो नहीं तो पता नहीं कि कहाँ कुए में जाकर पड़ेगा अगर मैं आज अहंकार में आजाऊँ और अपने आपको गुरु मानकर अकड़ कर बैठ जाऊँ तो मेरी क्या दशा होगी पता नही। गुरु नाम, ज्ञान, समझ और विवेक का है। यहां तक मैं सहमत हूं। यही सत्संग की महिमा है—

विन सतसंग विबेक न होई।
राम कृपा विनु सुलभ न सोई।

आप लोग प्रकाश का ध्यान किया करो। अगर प्रकाश का ध्यान नहीं कर सकते तो जिस रूप में तुम उसे मानते हो उसे मत समझो कि वह फकीर चन्द है, मस्तराम का लड़का और होशियारपुर में रहता है या कोई और गुरु है वह अमुक स्थान पर पैदा हुआ है। उसके इतने बच्चे जमीन और सम्पति थी। अगर ऐसा समझोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। हां ! उस रूप को जो तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है अगर तुम उसे पूरा समझ लोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार हो सकता है। जिस प्रकार एक स्त्री का लड़का जब उसे मिलता है तो उसका और भाव होता है जब उसका भाई मिलता है तो उसके और भाव होते हैं, स्त्री वही है, जब पति मिलता है तो और भाव होते हैं। जो कुछ भी है तुम्हारे अपने प्रेम के ऊपर है।

जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

मैंने यह समझा है। शायद दाता ! मैं भूला हुआ हूँ। पता नहीं मैं सच

कहता हूँ या झूंठ कहता हूँ। अगर आप आज्ञा न देते कि शिक्षा को बदल जाना तो मैं कुछ न कहता। आपकी दया और सत्संगियो की दया से जो कुछ मैंने अनुभव किया है वह मैं कहता हूँ। मुझे कोई दावा नहीं। मेरी समझ में यह आया है। अगर दूसरों को लिखने का अधिकार था तो मुझे भी अधिकार है। उन्होंने दावा किया, मैं कोई दावा नहीं करता। मेरी समझ में यह आया है, शायद मैं गलत हूं। मेरे लिए तसल्ली है। मैं कई बार अकेला बैठता हूं जब बाणियाँ सुनता हूं तो मेरा हृदय घबरा जाता है। फिर जब अपना अनुभव मेरे सामने आता है तब हृदय ठन्डा होता है। अगर मैं यह सच्ची बात आप लोगों को नहीं बताता और आप लोगों से मत्थे टिकवाता हूं. धन लेता हूं तो मैं कहां जाऊँगा। केवल एक ही बात है कि मैं किसी को धोखा देकर नहीं लेता। मैं साफ कह देता हूं जिसकी इच्छा है दे जिसकी इच्छा नहीं है वह न दे। मैं तो अपने कर्म का चक्कर काटता हूं।

भव सागर अति अगम पंथ, नहिं सूझे कोई।
शब्द जहाज चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई॥

यह प्रश्न मैं अपनी आत्मा से करता हूँ कि क्या शब्द जहाज के बिना आदमी पार नही जा सकता? कोई दावा नहीं। तन सुमिरन से स्थिर हो जाता है, मन, नाम और अजपाजाप से स्थिर हो जाता है, रूह ध्यान से स्थिर ही जाती है, सुरत प्रकाश और शब्द से स्थिर हो जाती है। जब वह स्थिर हो जायेंगी तो उसे पता लगेगा कि मैं कौन हूं। यह अभ्यास इसीलिए कराया जाता है कि आदमी को पता लग जाये कि मैं कौन हूं। जब तुम शरीर में होते हो, डाक्टर ने तुम्हें क्लोरोफार्म दिया है, तुम्हारा शरीर कट रहा है किन तुमको पता नहीं होता तो क्या यह प्रमाण नहीं है कि आप शरीर हीं हैं। यह प्रमाण है कि आप शरीर नहीं हैं। ऐसे ही ध्यान है। जब आदमी ध्यान में गरक हो जाता है तो मन जो विचार उठाता था वे बन्द हो जाते हैं मगर तुम रहते हो। इसका क्या भाव? इसका भाव यह है कि जो विचार मन के अन्तर निकलते हैं वह तुम नहीं हो। तुम कुछ और चीज हो। इसका अभ्यास से पता लगता है। अगर मैं जबानी समझा भी दूँ तो जब

तक आप साधन करके अनुभव न करोगे, आपकी शान्ति नहीं मिलेगी। आगे मैं प्रकाश को देखता हूँ। जो चीज प्रकाश को देखती है उसको तलाश करता हूं। जब कभी दूसरे तीसरे महीने ऐसी समाधि लगती है तो पता लगता है कि मैं न प्रकाश हूं और न ही शब्द हूँ, न मन हूं और न शरीर हूं। मैं ऐसी चीज हूँ जो सबको देखती और सब में रहती हुई सबकी साक्षी है उसे सन्त सुरत कहते हैं। सन्त तो शायद कह गये कि वह अनामी, अलख, अमर या अपार है। मैं नहीं कहता अगर कोई सन्त वह बन गया है तो कुछ करके दिखाये। वह तो आधार है। देश में कितनी विपत्ति और बीमारी हैं। कोई उसे टाल दे। जो पलटू जैसे सन्त ऐसा कह गये—

साधो भाई हम वहां के वासी, जहां पहुंचे नहीं अविनाशी।

उन्होंने कहा कि जो काम सन्त कर सकता है वह ईश्वर परमेश्वर नहीं कर सकता। उसी पलटू साहिब को दूसरे साधुओं ने जीवित उठाकर उबलते हुए तेल के कढ़ाये में डालकर फूंक दिया तो उसका वह ज्ञान कहां गया? इस वास्ते मैं पिछले सन्तों के साथ सहमत नहीं हूं यद्यपि वह जेठ महीने में इशारा कर गये—

जेठ महीना जेठा भारी—जीवन हिरदे तपन करारी।
सन्त दयाल जीव हितकारी—नहीं खालिक मखलूक न खिलकत।
कारन कारज नहीं वहां दिक्कत-राम रहीम करीम न केशों।

वह वही दशा है। मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। मुझे तो उस प्रकृति के खेल का पता नहीं लगा। मैंने सारी आयु खोदी मैं उस खेल को नहीं जान सका। शरणागत के सिवाय मेरे पास कुछ शेष नहीं है। वह जो एक तत्व, अकाल पुरुष Nameless है अपने आपको उसके सुपुर्द करता रहता हूँ। जब कभी मन में आता हूँ तो दाता-दयाल के रूप को 'वह' समझ कर शरणागत होता हूँ, कभी प्रकाश और कभी शब्द समझ कर शरणागत होता है। मेरे जीवन का परिणाम क्या होगा, मैं कैसे मरूँगा, कहां जाऊँगा मुझे स्वयं पता नहीं है यह इच्छा अवश्य है कि दाता मुझे शक्ति दे जब मैं मरूँ तो संसार को बता सकूँ कि मेरा

क्या परिणाम हुआ । मैं इस समय तक यहां तक पहुँचा हूं । मैं गुरु के चरणों की महिमा क्यों मानता हूं कि उनके कारण मुझे शान्ति मिली है—

बूढ़त रहे मझधार, मिला नहीं कोई सहाई ।
आये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई ।।

मैं अशान्त था । मेरा भाग्य मुझे दाता के चरणों में लेगया था । उन्होंने सारा जीवन छाती से लगाया । जिस प्रकार छोटा बच्चा ऐसी बात कह देता है जो कहने वाली नहीं होती मगर माँ बाप उसकी बात को सुनकर हँसते हैं । ऐसे ही मैं भी मूर्ख था । दाता मेरी बातों को सुनकर हँसा करते थे मगर आखिर में उन्होंने मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुझको सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा । आप मेरे सच्चे सत्गुरु हैं । अब दाता दयाल तो हैं नहीं, मैं किसकी सेवा करूं, जितनी बुद्धि है उतनी आप लोगों की सेवा करता रहता हूं ।

नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया ।
पद अभेद दरसाया, भेद का फन्द छुड़ाया ।।

भेद का भाव (Soal) हैं । बहुत भेद समझा । यहां भेद समाप्त होगया कि मैं कौन हूं ? शब्द पैदा होता है उसमें चेतनता आती है मैं' बन जाती हैं । मेरी 'मैं मैं' 'मैं मैं' करती रहती है । बनारस वालों ! तुम आये हो । मेरे पास शुभ भावना के सिवाय और कुछ नहीं है । मैं (Good Wishes) देता हूँ । मेजर साहिब ! आप आये हैं, सच्चे दिल से चाहता हूँ कि तुम्हारा लड़का स्वस्थ हो जाये । मैं जानता हूं कि अगर मेरा लड़का बीमार पड़जाये तो क्या मुझे दुख नहीं होता ? होता है, सबको होता है । हैदराबाद वालो तुम्हारे कष्ट दूर होजायें और मैं क्या कर सकता हूँ ।

—o—

सन्तमत सत्संग केन्द्र, भीलवाड़ा (राजस्थान) दि० २४-४-७६

प्रिय भाई श्री इन्द्रजोत जी शर्मा,

सादर सप्रेम राधास्वामी।

सदा सपरिवार सुखी रहो। आपका कृपा पत्र १६-४-७६ को प्राप्त हुआ। धन्यवाद। उत्तर में निवेदन है कि—

(१) आपने जो डा० छेदालाल जी का पता मुझे भेजा है और मेरा पता उनको भेजने की कृपा की है उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं।

(२) यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप सुमिरन, ध्यान व भजन में लगे हुए है। आपको यह शिकायत है कि शब्द तो त्रिकुटी का सुनाई देता है, पर प्रकाश पूरी तरह दिखाई नहीं देता। आप प्रकाश की ज्यादा चिन्ता न करो, आगे चलकर वह स्वयं दिखाई देने लगेगा या अगले सोपान यानी सुन्न का सारंग रारंग का शब्द भली प्रकार सुनाई देने लगे तो मुझे लिखना, मैं प्रकाश खोल देने का तरीका आपको लिख दूँगा।

(३) श्री महाराज जी ने यह ठीक ही फरमाया है कि प्राण छोड़ते समय शब्द व प्रकाश न सुनाई और न दिखाई दिये तो पार नहीं जा सकते, क्योंकि गुरु मूर्ति जो अपने अन्दर प्रकट होती है, वह ख्याल की यानी मन की बनाई हुई होती है। वास्तव में गुरु के चार रूप होते हैं। यानि—

चोला, नूर शब्द और अनुभव का सार।
चाहे जाकी शरण ले, गुरु के रूप हैं चार॥

यद्यपि इस वाणी में यह आजादी दी है कि चाहे जिस गुरु की शरण लो, पर अनुभव यह बतलाता है कि आप गुरु की ही तो शरण ले सकते है, जिसको आपने अपने अन्तर में प्रकट कर लिया है। वास्तव में सतगुरू या सतज्ञान उस अनुभव का सार है जो कि शब्द सुनते २ अशब्द गति आ जाने पर प्राप्त होती है।

(४) आपने यह भी लिखा है कि आपका लड़का किसी अध्यात्म निकेतन में कोई साधन करके कुण्डलिनी को जाग्रत कर रहा है और पूछते हैं कि उस साधन का छुड़वाकर उसे सन्तमत का साधन कराया जावे। इस बावत मैं कुछ नहीं कहना चाहता। इसका निर्णय तो आप ही कर सकते हैं। मैं तो सिर्फ जो अध्यात्म ज्ञान व सतज्ञान के बारे में अब तक संतों की वाणियों, प्रवचनों और सुरत शब्द योग का साधन कर मुझे जो जानकारी व अनुभव अब तक हुआ है, वही लिख सकता हूँ। सम्भव है कि मेरा ऐसा लिखना आपको निर्णय करने में सहायक हो।

नर देह हमको क्यों मिली, हमने सही जाना नहीं।
वेद शास्त्र सन्तमत को ठीक पहचाना नहीं॥
सन्त कहते देह नर की, मिली किस वास्ते।
लोक सुख परलोक सुख, दोनों को पाने के लिए।
लोक सुख तन-मन का सुख, और तीजा आत्मानन्द है।
परलोक का सुख मुक्ति है, शान्ति है, ब्रह्मानन्द है।
लोक अलोक सुख पावन ताई, सहज जुगत सब सन्तन गाई।
सन्त बतावें नाम की भक्ति नानक, कबीर और तुलसीदास भी।
वह नाम क्या है, जिसकी भक्ति करना सन्त लोग बताते हैं?
नाम नाम सब कोई कहे, और नाम न चीन्हे कोय।
जा शब्दे साहब मिले, नाम कहावत सोय।
यह शब्द कौन सा है और कहाँ मिलेगा?
शब्द सब की खोपड़ी में, गूँजता हरदम अजीज।
पर वही सुन पाते हैं, जिनको हो सुनने की तमीज।

(५) वास्तव में अध्यात्म ज्ञान व सतज्ञान के कई दर्जे हैं। ठीक ऐसे ही जैसे कि स्कूलों व कालेजों में प्राइमरी से लेकर एम० ए० या इससे ऊपर तक के दर्जे हैं ऐसे ही अध्यात्म या सन्त ज्ञान के दर्जे हैं।

(१) जिज्ञासा अवस्था (२) निर्विकल्प समाधी (३) आत्म पाद

(४) तुरिया अवस्था (५) तुरियातीत अवस्था (६) सतपद (७) निर्वाण पद (८) विदेह गति (९) जीवन मुक्त अवस्था (१०) मोक्ष या मुक्ति।

जो अध्यात्म ज्ञान व सतज्ञान के बाबत इन धर्मावलम्बी आवागमन को मानने वाले महापुरुषों द्वारा अनेकों ग्रन्थों में दिए हुए हैं और नाना प्रकार के साधन, अभ्यास व भक्ति भी बतलाई है। जैसे एक एम. ए. पास करने वाला विद्यार्थी प्राइमरी स्कूल की तालीम को फिजूल नहीं कह सकता। ठीक वैसे ही कोई भी महापुरुष या सन्त इन नाना प्रकार के अध्यात्म ज्ञान की शिक्षा को चाहे किसी दर्जे की हो कोई फिजूल या बेकार नहीं कह सकता। क्योंकि इस आध्यात्मिक शिक्षा व साधनों से अपने-अपने अधिकार के अनुसार कोई न कोई गति या दर्जा तो प्राप्त होता ही है। साथ ही इसके सबसे उच्च कोटि या दर्जे को प्राप्त करने के हर प्राणी अधिकारी नहीं होते।

नानक कहे लाखों में कोई एक।

साथ ही उच्च कोटि की गति यानी मोक्ष प्राप्त करने के साधन भी देश काल व पात्र व स्थितियों परिस्थितियों के अनुसार हमेशा बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे। मिसाल के तौर पर त्रेता युग में नाना प्रकार के यज्ञों को बड़ी महानता दी जाती थी। क्या आजकल के हम कलियुग प्राणी जो पेट भरने को अनाज के लिए तरसते हैं और जिनको यज्ञ में आहुति देने वाली सामग्री जैसे घी, मेवा, मिष्ठान इत्यादि के दर्शन तक नहीं हो पाते, आज क्या इन यज्ञों को महानता देकर कोई यज्ञ रच सकते हैं। कलियुग में कौनसा साधन मोक्ष प्राप्त करने के लिए सम्भव व उचित है। इसकी बहुत ही सरस व सुन्दर व्याख्या संत तुलसीदास जी महाराज ने रामायण के पहले काण्ड यानी बाल काण्ड में की है। उनकी कुछ चौपाई व उनका आशय नीचे दिया जाता है। उन्होंने नाम की महि ताते

हुए लिखा है कि—

एक राम तापस त्रिय तारी।
एक नाम खल कोटि उबारी।।

आगे कहते हैं कि—

कहाँ तक करूँ मैं नाम बड़ाई।
राम न सके नाम गुण गाई।।
चहुं श्रुत, चहुं युग नाम प्रभाऊ।
कलि केवल नहिं आन उपाऊँ।।

साथ ही यह भी बतलाते हैं कि कलियुग में मोक्ष प्राप्त करने का उपाय केवल नाम की भक्ति क्यों है। वह आगे इस कारण को बताते हुए कहते हैं कि—

ध्यान एक युग, मख विधि दूजे।
द्वापर परितोषित प्रभु पूजे।।

अथवा सतयुग में जबकि थोड़ी आवादी थी, लोगों को केवल ध्यान की शक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन कराया जाता था। त्रेता में जब आवादी बढ़ने लगी और लोगों की ध्यान शक्ति कमजोर पड़ने लगी तो हमारे ऋषि मुनियों ने मोक्ष प्राप्ति का साधन यज्ञों का करना निश्चय किया। लेकिन तीसरे युग द्वापर में जब आवादी और बढ़ गई यानी सतयुग व त्रेतायुग से कई गुनी ज्यादा बढ़ गई और यज्ञ की सामग्री मिलने में अभाव प्रतीत होने लगा, तो उस समय के हमारे धार्मिक गुरुओं ने तजवीज किया कि जगह-जगह भगवान की मूर्तियाँ बनाओ और मन्दिर बनाओ। थोड़ा सा घी, सामग्री इत्यादि लेकर आरती उतार दिया करो। इसलिए मूर्ति पूजा का द्वापर में बहुत ही जोर रहा। पर आज जिस युग में हम रह रहे हैं उसको कलियुग, करयुग या विज्ञान का युग कहा जा सकता है। मूर्ति पूजा में उतनी श्रद्धा नहीं, जितनी द्वापर में थी। और वह धीरे-धीरे कम होती जा रही है। यहाँ तक कि हमारे मन्दिरों में बन्द

देवता कह रहे है कि हमारे दर्शन नहीं करते तो अपने दर्शन ही दे जाया करो। वह भी नहीं कर पाते, क्योंकि देवता के मन्दिर में जायेंगे तो जूते खोलने, उतारना पड़ेगे, पालथी मारकर पूजा करनी पड़ेगी, इससे पेन्ट में शिकन पड़ जायगी इत्यादि।

ज्यों-ज्यों बढ़े आबादी, ध्यान बँटे हो गई बरबादी।

इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि पुराने साधन, ध्यान, यज्ञ देवताओं की पूजा खत्म नहीं तो फेल हुई सी नजर आती है। इसलिए सन्त तुलसीदास जी तजवीज करते हैं कि—

ध्यान एक युग, मख विधि दूजे।
द्वापर परतोषित प्रभु पूजे॥
कलि केवल इक नाम अधारा, वेद शास्त्र सन्त मत सारा।
नाम जपत नहिं जागत जोगी, विरक्त, विरंच, प्रपंच, वियोगी।
ब्रह्म सुख अनुभव ही रूपा, अकथ, अमायाव न नाम न रूपा।

जो बात सन्त तुलसीदास जी ने कही है, यद्यपि व्याख्या करने का ढंग अलग है वही सन्त राधास्वामी दयाल ने कहा कि नाम की भक्ति तथा सुरत शब्द योग से जो अवस्था प्राप्त होती है वह है अनामी पुरुष की प्राप्ति। इस अनामी पुरुष को ही राधास्वामी मत वाले 'राधास्वामी' नाम से पुकारते हैं और कहते हैं कि—

अकय, अपार, अगाध, अनामी, अस मेरा राधास्वामी।

साथ ही यह तय करते समय कि हमको मोक्ष प्राप्ति के लिए जो प्रयास किया जाय वह जमाने के लोगों की रुचि यानी मनोवृत्ति के अनुकूल हो। आज कल के लोगो की मनोवृत्ति ऐसी है कि हम जो भी काम करें, चाहे स्वारथ का हो, चाहे परमारथ का, ऐसा होना चाहिए कि वह आराम के साथ जल्दी सफलता को प्राप्त हो। मिसाल के तौर पर अगर हम सफर करते वक्त किसी अड्डे पर पहुंचे और वहाँ पर उस स्थान पर ले जाने के लिए जहाँ पर हमें पहुंचना है किराये का बैल ताँगा खड़ा हो, साथ ही घोड़ा तांगा खड़ा

हो और साथ ही एक बस खड़ी हो तो हम बस में ही सफर करना ज्यादा पसन्द करते हैं, चाहे पैसे कुछ ज्यादा ही क्यों न लगे। ऐसा हम क्यों करते हैं ? इसलिए कि बस के अन्दर आराम से बैठने के लिए सीट मिल जाती है और वह बैल ताँगे से चौथाई या इससे भी कम समय में और घोड़े ताँगे से आधे समय में या इससे भी कम समय में हमारी मंजिल पर पहुंचा देती है और चूँकि सुरत शब्द योग नाम की भक्ति का प्रयास आराम के साथ किया जा सकता है तथा सफलता भी जल्दी ही मिल जाती है। लोगों का रुझान इस सहज योग की तरफ दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है और इस योग की कैमाई में संसार के अन्दर इस समय लाखों आदमी लगे हुए हैं और करोड़ों आदमी इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयत्न-शील हैं।

मालिक सबका भला करे। इस पत्र के मिलने व पढ़ने से आप पर क्या प्रभाव पड़ा, कृपया लिखें।

शुभ चिंतक
—कृषक

—÷—

ग्राहकों से निवेदन

'मनुष्य बनो' के ग्राहक भाइयों से निवेदन है कि वे अपना अवशेष शुल्क भेजें। शुल्क न आने पर पत्रिका को मुसीबत का सामना करना पड़ता पत्रिका की सहायता करना ग्राहक भाईयों का पुनीत कर्तव्य है कि मांग-अवसरों पर दान भेजकर पत्रिका को सुचारू रखें।

प्रवचन

परमसन्त परमदयाल पंडित फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद बाद है भरम कथा ।
जो कोई उनका रूप पिछाने, विवाद है धरम कथा ॥
बिन गुरु ज्ञान की ग़म नहीं होती, ज्ञान गुरू के आधारा ।
गुरु की संगत करे जो प्रानी, पावे सार भेद सारा ॥
दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ।
भक्ति की दृष्टि जब आई, ईश्वरमय होगई सृष्टि ॥
गुन का ग्राहक कोई कोई होगा, अवगुण के ग्राहक हैं सब ।
गुणी मिले तो गुण बतलावे, अगुन सगुन समझे नरतन ॥
राधास्वामी परम दयाला, शब्द नाव लेकर आये ।
हाथ पकड़ कर सबहिं बिठाया, तट के निकट खींच लाये ॥

राधास्वामी । मैं बचपन से राम को मिलने निकला था । मेरा भाग्य या अभाग्य, भगवान की इच्छा या मेरे कर्म, इस तलाश के सिलसिले में दाता-दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज (जिनका यहां बुत (Statue) है के चरणों में लेगई थी । उन्होंने राधास्वामी मत या सन्तमत दिया था । जब मानव (इन्सान) ऐसी वाणियाँ सुनता है तो वह स्वयं कोशिश करता है कि मुझे माया और ब्रह्म का भेद मिल जाये अगर केवल बाणी ही पढ़ली और उसे अनुभव नहीं किया तो उसके पढ़ने से फिर क्या लाभ । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । ये सन्तों की बाणियाँ मेरे लिए अचम्भा थीं । मैं गलत तो कह नहीं सकता था क्योंकि मेरा विश्वास दाता दयाल पर था और उन्होंने वाणियों की प्रसंशा की थी । इसलिए मेरा उत्साह नहीं पड़ता था कि गलत कहते हैं मगर मेरी समझ में नहीं आती थीं । इस बात को समझने के लिए मैंने सारा जीवन व्यतीत कर दिया और अब मुझे समझ

आई कि जो कुछ सन्तों ने कहा है वह ठीक है मगर आप लोग इसे नहीं समझ सकते ।

मैंने इस माया ब्रह्म का भेद तुम लोगों से पाया । दया दाता दयाल की है उन्होंने मुझे इसलिए काम दिया था कि मुझे माया और ब्रह्म के भेद का पता लग जाये और माया और ब्रह्म भ्रम सिद्ध होजायें और इससे निकलजाऊँ । वह मुझे कैसे पता लगा ? एक दिन पहले एक सन्त का पत्र आया । वह लिखता है कि आप एक दिन पहले प्रकट हुए । आप बड़े क्रोध में थे और आपने मुझे बहुत बुरा भला कहा उसने क्षमा मांगी है कि मैंने क्या कसूर किया है ? अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तू उसके अन्तर गया था ? मैं नही गया न ही मुझे पता है । जब मैं ऐसी बातें नाना प्रकार के लोगों से सुनता हूँ । कोई कहता है कि मैं वहां प्रकट हुआ, कोई कहता है कि मैं वहाँ प्रकट हुआ और उसकी सहायता की तब मुझे माया और ब्रह्म के भेद का पता लगा ।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा ।
भेदवाद है भरम कथा ॥

माया और ब्रह्म फिर क्या हुआ ? हमारे अन्तर प्रकाश नूर जो परमात्मा का अंग है जब वह इस शरीर में आता है तो हमारे अन्तर मन, बुद्धि चित्त और अहंकार पैदा हो जाता है । जो दो चार दिन का छोटा बच्चा होता है उसे कोई बुद्धि नहीं होती । क्यों नहीं होती ? क्योंकि उसके अन्तर अभी तक मन, चित, बुद्धि, अहंकार (Devlop) नहीं हुए होते ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जाता है वह प्रकाश रक्त द्वारा मस्तिष्क में दौरा करता रहता है । जितना वह ज्यादा दौरा करता है उतने ही उसके अन्तर के Clels बढ़ जाते हैं और उसे सोच समझ, ज्ञान या अनुभव आने लगता है । जब तक कोई आदमी सोच विचार में फँसा हुआ है और उसे सत मानता है वह भ्रम में है ।

जिस सन्त ने मुझे लिखा कि मैं उसके अन्तर प्रकट होकर उसे डाँटा और क्रोध किया । मैं नहीं था । जो कुछ उसने देखा वह क्या था ? वह उसका

भ्रम है। या नहीं मगर पता लगता है। ऐसे ही हम सब संसार के प्राणी इस मायावाद अर्थात भ्रमवाद में फँसे हुए है। हमारे अन्तर नाना प्रकार के विचार उठते है। कभी भक्ति और कभी शत्रुता, मित्रता के विचार उठते हैं। जब तक हम उन विचारों में फँसे हुए हैं अर्थात उनको सत मानते हैं तब तक हमारा संसार का संघर्ष दुख सुख, नेकी बदी, पाप पुन्य और धर्म कर्म समाप्त नहीं हो सकते सन्तों का मार्ग जीव को अर्थात जो असल में हम हैं. उसे इस संसार से बाहर निकालने के लिए है ताकि फिर हम भ्रम में न फँसे और हमें इस संसार के कष्ट न हों, न शरीर मिले और न मन मिले फिर हम कहां रहें ? अगर अब मैं बताऊँ कि कहां रहें तो तुम नहीं समझ सकोगे और अगर मैं यह कहुँ कि मन और बुद्धि से परे कोई चीज है तो तुम उसे नहीं समझ सकते जब तक तुम स्वयं अमल करके न देखो। तुम्हारा अमल क्या होगा ? कि मन को छोड़ जाओ। मैं मन को नहीं छोड़ सकता था क्योंकि मैं फँसा हुआ था। मैंने दाता दयाल की बहुत सेवा की, जीवन में सच कहा, लेकिय मुझे समझ नहीं आती थी। मैं कभी सुरत मे भटकता था और कभी दुख में भटकता था। सुख और दुख दोनों ही भ्रम हैं। मगर इसकी समझ हर एक आदमी को नहीं आती। मुझे आप लोगों की दया से इस सन्तमत की समझ आई। अब मैं उसमें रहने का यत्न करता है। यह सन्तमत बताता है कि माया और ब्रह्म से परे क्या अवस्था है ? उसे वह जान सकता है जो मन को छोड़ सकता है। इसका छोड़ना कठिन है। मैं आपको सच्ची बात बताता हूँ। मैं किसी समय छोड़ भी जाता हूं. मगर यह मन कोई न कोई शकल बनाकर मेरे सामने आजाता है। इसके परे एक अवस्था है जिसका मुझे अनुभव है। इसी बात को बाबा सावनसिंह जी कहा करते थे कि दस दरवाजे आगे सत्गुरु खोलता है वह जो आगे सत्गुरु खड़ा है। संसार ने यह समझा हुआ है कि आगे बाबा सावनसिंह दाढ़ी वाला था। ये गलती खाते हैं। वह जो असली सत्गुरु है वह न तो इन्सान है, न उसकी कोई शक्ल है और न उसका कोई रूप है। वह एक अनुभव स्वरूपी तत्व है उसे हर एक नहीं जान सकता। इसलिए सन्तों ने कहा है कि सबसे पहले अपनी बुरी माया

को हटाकर सच्ची माया पैदा करो। प्रारम्भ में जब तुम इस मंजल पर चलते हो तो सबसे पहला उसूल यह है कि दुखदाई, बुरे, गन्दे और वैरभाव विचारो को छोड़ दो फिर अच्छे विचार लो। जब यह अनुभव होजाये तो फिर अच्छे विचारों को छोड़ दो। इन विचारों को गुरु के बिना कोई नहीं छोड़ सकता। यह वह भेद है जिस को आज दिन तक किसी ने नहीं समझा। जिन गुरुओं ने समझा या किसी को समझाया उनके मुँह में बन्द ठोक दिया——

धर्मदास तोहि लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई॥

राधास्वामी दयाल ने कहा है——

सन्त बिना कोई भेद न जाने।
वे तोहि कहें अलग में॥

मैंने अलग के परदे को खोल दिया। मैंने गलती की या अच्छा किया, मुझे यह पता नहीं। मैंने तो केवल अपनी जान बचाने के लिए परदा खोल कि जिस प्रकार लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और मैं नहीं होता। अगर मैं यह स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो मुझे कितना दण्ड मिलेगा जिस प्रकार हिन्दू धर्म में माया का नियम है कि सबको दण्ड मिला है। अजुन ने कृष्ण के मुख से गीता के अठारह अध्याय सुने लेकिन भागवत अनुसार वह नर्क में गया और युधिष्ठिर जिसने सारा जीवन सच बोला, थोड़ीसी पालिसी के कारण अढ़ाई घड़ी के लिए नर्क में गया। एक तो इस वास्ते मैंने सचाई का व्यवहार किया दूसरे दाता दयाल ने कहा था कि जगत कल्याण और निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता के लिए काम करना और भव सागर से पार करना। मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य थे वे मैं कर चला। निबल, अबल, अज्ञानी जीवों और संसार को कह चला हूँ कि बाहर से कोई राम, कृष्ण, देवी देवता या गुरु तुम्हारे अन्तर नहीं आता। जब कि मैं किसी के अन्तर जीबित नहीं जाता तो कैसे मानू कि कोई दूसरा आता है। केवल इस बात को परदे में रख कर ये धर्म बन गये, मुसलमान बन गये, हिन्दू बन गये और ईसाई सिख बन गये। राधास्वामी आपस में बट गये। कोई आगरा कोई

व्यास, कोई साबन आश्रम, कोई होशियारपुर, और कोई धाम। यह जितना खेल है यह सब गलत समझ के कारण है। इसका परिणाम क्या निकला ? हम इस अज्ञान के कारण आपस में बट गये और एक दूसरे के सिर फटते हैं। एक दूसरे के विरुद्ध जाते हैं। मैंने इस विचार से सचाई को प्रकट किया इसका क्या परिणाम निकले यह मुझे पता नहीं न ही मैं जानता हूं। हो सकता है मैंने गलत समझा हो मगर मेरी आत्मा मुझे गलत नहीं कहती। मेरे सामने और केस आते हैं। जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता नहीं मुझे पता होता है। अगर मैं यह सच्ची बात संसार को नहीं बताता तो क्या मैं दोषी नहीं हूँ ? ये सब गुरु लोग मेरे सामने मानते हैं कि जो कुछ मैं कहता हूं वह ठीक है मगर पब्लिक को नहीं बताते। अगर पब्लिक को बतादें तो धन नहीं आयेगा और लोग पीछे नहीं फिरेंगे। यह भेद है। इसलिए मैंने गृहस्थियों के लिए सचाई वर्णन की है कि ऐ गृहस्थियो ! तुम बात को और गुरुमत को समझो, लुट मत जाओ। मूर्ख बन कर अपने बच्चों के पेट काट कर मत लुटो केवल इस विचार से कि सत लोक पहुँच जाओगे और तुम्हें मुक्ति मिल जायेगी। यह एक भ्रम हैं ये मन्दिर मसजिदें समाध और डेरे बना देना भी भ्रम है। सन्तों की शिक्षा या असलियत इस भ्रम से निकालने के लिए। यह संसारी कामों के लिए ठीक है मगर परमार्थ के काम में यह रुकावट है। इसलिए सन्त किसी मन्दिर या समाध को नहीं पूजते। राधा-स्वामी दयाल ने वाणी में भी साफ लिखा हुआ है कि समाधि पूजा ठीक नहीं मगर राधास्वामियों ने आगरे में स्वामीजी की समाधि बनादी और उनका वहां लाखों रुपया खर्च होगया। पब्लिक ने बहां रुपया दिया। मैं वहां देख आया हूं सारी सार वचन हिन्दी में लिखी हुई है। यह क्या है ? यह राधा-स्वामी या सन्तों की शिक्षा के बिल्कुल विरुद्ध है। ये सन्त नहीं और न ब्रह्म न ईश्वर और न परमेश्वर के पुजारी हैं। मैं भी कभी यह सुनकर चकित हुआ करता था। दाता दयाल ने लिखा है--

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं जानूँ।
मैं फकीर का नाम दिवाना, सब से वढ़कर मानूँ ॥

वह भी ऐसा ही कह गये । क्या यह ठीक है ? हाँ ! ठीक है ऐ मानव ! मैंने आपको बता दिया कि जो कुछ भी है तेरा अपना ही आत्मा और अपना ही आप है । और कुछ नहीं । जब प्रकाशरूपी आत्मा शरीर में आता है तो क्या हो जाता है ? मन. चित्त, बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं । वह माया है । लोग दस दरवाजे शरीर, आंख और कान के गिनते हैं । मैं पांच कर्मेन्द्रियें और पांच ज्ञानेन्द्रियां गिनता हूं । अब तक इन्सान इन इन्द्रियों से बाहर नहीं निकलेगा वह अपने घर जहाँ से वह आया है नहीं समा सकता या सर्वाधार में मिल नहीं सकता, यह भेद है ।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद बाद है भरम कथा ।

मैंने आपको भरमकथा सिद्ध करदी । मेरे पास लोग आते हैं क्या वे इसलिए आते हैं ? वे तो संसार के चक्कर में आये हुये हैं । किसीं स्त्री को पती छोड़ जाता है वह दुखी है, किसी को कोई कष्ट और किसी को कोई । यह सन्तमत सर्व साधारण की चीज नहीं है । यह तो किसी विशेष-विशेष आदमी के लिए है जो सचाई का इच्छुक है । सब के लिये यह है कि अपनी माया के खेल को ठीक करो । दुरे गन्दे, विचारों, बुराई धोखा फरेव चारसौ दीस को छोड़कर अच्छाई और नेकी की ओर आओ ताकि तुम्हारा माया देश का जनम सफल होजाये ।

दो मार्ग हैं, एक तो निकृतिमार्ग, केवल इस संसार से परे जाने के लिए ताकि फिर वापिस न आओ । दूसरा मार्ग इस संसार में सुखी रहने के लिए है । इस समय तुम देखो देश की क्या दशा है । इरान में क्या हो रहा है । बियतनाम में कितने साल लड़ाई रही और क्या क्या होगा । पाकिस्तान में क्या हुआ । यह सब क्या है ? यह इसलिए है कि जो जीवन में गुजारा करने के नियम हैं उन्हें Follow नहीं किया । ये सब झगड़े माया और ब्रह्म के देश के नियमों को पालन न करने के कारण है । इस माया देश का सबसे बड़ा नियम क्या हैं ? संकल्प, विचार कीं Foundation है ।

जो आदमी बच्चों को केवल बच्चों के विचार से पैदा नहीं करता, स्वाभाविक बच्चे पैदा हो जाते हैं वह लाख कोशिश करे कि उनमें सचाई,

जब अनुशासन में आयेगा। बिल्कुल नहीं आयेगा। यह नियम है। विधान सभाओं में हर जगह लड़ाई होती रहती है। यह क्यों है ? क्योंकि हम सब विशेष विशेष को छोड़कर Uncalled for children बिन बुलाई सन्तान हैं। सन्तान अच्छे विचार से पैदा नहीं की गई। खुदरो सन्तान हैं अगर इनसे कोई यह आशा रखे कि ये अच्छे नेक भारती बने तो यह नहीं हो सकता। यह मेरा अपना अनुभव है। और मैंने अपने घर और बाहर आजमाया है।

क्योंकि मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य हैं। एक निबल, अवल अज्ञानी जीवों की सहायता करना. वह मैं कर चला। क्या कर चला ? मैं भेद वता चला। हमारे दुखों का कारण शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का गिरना है। इस लिए अशान्ति है। शास्त्र साफ कहते हैं कि पचीस साल से पहले विवाह मत करो। क्यों ? क्योंकि रक्त की चालीस बूँदों से एक बूंद ओजस की बनती है ओजस की चालीस बूंदों से वीर्य की एक बूँद बनती है। जो आदमी चौबीस पच्चीस साल से पहले अपने ब्रह्मचर्य को किसी अनुचित ढंग से या विवाह से नष्ट करता है उसके भाग्य में अशान्ति, दुख, चिन्ता का आना एक स्वभाविक बात है। इसे कोई नहीं रोक सकता चाहे जो इच्छा करले। एक तो गुरु की आज्ञा से यह सच्चाई वर्णन कर चला।

यह दूसरे अपनी आर्थिक अवस्था के लिए हर आदमी को काम करना चाहिए। जब बच्चा अठारह का साल का हो जाता है अगर वह पढ़ता है तो और बात है वरना उसका कोई अधिकार नहीं है कि वह बाप या भाइयों की सम्पत्ति पर रहे। हर आदमी को अपना काम आप करना चाहिए काम चाहे छोटा हो या बड़ा, इसकी कोई बात नहीं। हमारे जितने घरेलू दुख हैं उनका सबसे अधिक कारण यही है कि हम लोग एक दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। पिछला समय गया जब घर का एक आदमी कमाता था और सात आदमी खाते थे। अगर घर में सात आदमी हैं तो सात कमायें तब भी घर का निर्वाह कठिन चलता है। इस समय हमारी यह दशा है तीसरे इन धर्मों, पंथों और गुरुओं के पीछे मत फिरो। किसी सतसंग में केवल बात को

समझने के लिए जाना चाहिए। क्योंकि सतसंग से यही मिलता है—

बिन सतसंग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई ॥

सतसंग इसलिए किया जाता है कि हमें सोजी आ जाये। माया और ब्रह्म के तीन भेद मैंने बता दिए।

चौथा इस समय देश में क्या हो रहा है? यह मौजूदा डैमोक्रेसी (Democracy) बिल्कुल काम नहीं करेगी। इसलिए जो शान्तमय आदमी हैं उन्हें राजनैतिक लायन (Political Line) में बिल्कुल भाग नहीं लेना चाहिए। हम गृहस्थियों को भी राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। यह सिबाय दुख के और कुछ नहीं है। सब जगह धोखा और फरेब है। यह ब्रह्म और माया का भेद है—

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद वाद है भरम कथा।

मैंने इस संसार का भेद बता दिया, मगर यह सारा भ्रम है। क्यों? क्योंकि आखिर एक दिन सबने चले जाना है। यह संसार क्या है? कोई सौ साल जीवित रहा, कोई पचीस और कोई सौ साल। हम लोगों ने इस संसार को सदा के लिए सत माना हुआ है। इसलिए हम रोते और पीटते हैं। एक आदमी अपने पुत्रों और पोतों के लिए कोशिश करता है मगर अपनी कोशिश नहीं करता कि तू मडते मरकर कहाँ जायेगा। तू अपने लिए तो बनाता। हम धोखा फरेब चार सौ बीस करके सम्पति बनाते हैं कि हमारे बच्चे काम आयेंगे और लड़कियों के काम आयेगी मगर यह कोई नहीं सोचता कि तू ! तू ने यहाँ नहीं रहना है। जब तू मर जायेगा तो पीछे से सन्तान जो चाहे करे। तू उनकी चिन्ता क्यों करता है। हम बूढ़े आदमी अपने बच्चों की कितनी चिन्ता करते हैं। उनके लिए सम्पत्ति बनाते हैं। अपने कोई नहीं सोचता कि भले मानुष ! जिस समय तेरी जान निकलेगी तेरा स्त्री और भाई तेरे किस काम आयेगा। किसी का कोई भी साथी नहीं। सिर्फ माया के बिना हमारा निर्वाह भी नहीं है। मगर असल में यह सब

जो कोई उनका रूप पिछाने, भेद वाद है भरम कथा ।

इसे समझने की आवश्यकता है । जब हम संसार में जीवित हैं हम ब्रह्म और माया से नहीं निकल सकते । जब तक जीवन है हम इसमें रहेंगे । केवल भेद समझ लो और असलियत को जान लो ताकि तुम्हें पता लग जाये तो तुम नहीं फँसोगे । अब तुम यहाँ सतसंग के लिये आये हो तुम्हें पता है कि तुम दो घन्टे के बाद यहाँ से चले जाओगे तो आपको फिर यहाँ कोई बन्धन नहीं होगा । ऐसे हीं जिसे यह ज्ञान हो जाता है और इसका भेद जान जाता है वह संसार में जीवन मुक्त अवस्था में रहता है—

बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरु के आधारा ।

गुरु की संगत करे जो प्रानी, पावे सार भेद सारा ॥

वह कहते हैं कि गुरु की सँगत के बिना भेद का पता नहीं लगता । जब संगत करोगे तब तुम्हें सारा भेद मिलेगा । अब आप बताओ कि जो बात मैंने कही है क्या कोई महात्मा कहता है ? क्या कोई पथवाला पब्लिक प्लेटफार्म पर कहता है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता ? कोई नहीं कहता वे भेद नहीं देते हैं । अगर दाता दयाल ने गुरुआई की तो धाम के लिये की । वह बहुत साफ लिख गये मगर जवानी खुलकर नहीं कहा जैसे कि मैंने कहा है । किसी ने केवल डेरे के लिये काम किया इसलिये भेद को छुपाकर रखा सचाई वर्णन नहीं की । सब धर्म वालों ने अपना अपना प्रोपेगन्डा किया । मैं अनामीधाम से इसीलिए आया हूं कि मैं सच्चाई वर्णन करजाऊँ । प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया है ऐसा नहीं कि मुझे कोई सुरखात का पर लग गया है या मैं आप लोगों को कुछ दे सकता हूँ । मैं तो आप लोगों को केवल सच्ची बात सच्चा भेद बताता हूं और मुझमें कोई शक्ति नहीं । हर आदमी को जो कुछ मिलता है अपने कर्म का फल मिलता है । जब सन्तों को भी अपने कर्म का फल भोगना पड़ा, वे बीमार हुये, उनके लड़के नालायक निकले तुम क्या आशा कर सकते हो कि क्या वे (सन्त) तुम्हारा या संसार का भला कर देंगे ? आपने अपना भला आप करना है । गुरू ने तुम्हें मार्ग बताना है । इसके अतिरिक्त जो गुरु को अधिक प्रभुता देते हैं वे पागल अज्ञानी और

मूर्ख हैं। गुरू की संगत के बिना काम नहीं चलता।

बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरू के आधारा।
गुरू की संगत करे जो प्रानी, पाते सार भेद सारा॥

जब आदमी गुरू की संगत करता है तो उसे हकीकत का पता लग जाता है फिर वह फँसता नहीं। सत्संग का सही भाव है कि मानव को सच्चा ज्ञान मिल जाये और Line of action मिल जाये। मेरे जैसे इन्सान के पाँच छः सतसंग किये हुये सारे जीवन भर के लिए काफी हैं। उसे कहीं धक्के खाने की आवश्यकता नहीं। केवल अपनी Practical life का अमल रह जाता है। क्योंकि संसार में संसार की इच्छायें और आशायें हैं। इसलिए वह बात समझ में नहीं आती। यह जो कुछ मुझे या तुम्हें मिलता है यह हमारे पिछले और कुछ इस जन्म के कर्म हैं।

दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि॥
भक्ति की दृष्टि जब आई, ईश्वरमय हो गई सृष्टि॥

वह कहते हैं कि दृष्टि और सृष्टि है। जैसे तुम दृश्य देखते हो उस प्रकार के तुम्हारे संसार के विचार बन जाते हैं। जो भक्ति करता है वह भक्ति की सृष्टि बन जाता है। इस संसार के चक्कर से बच जाता है।

गुन का ग्राहक कोई कोई होगा, अवगुन के ग्राहक हैं सब।
गुणी मिले तो गुण बतलावे, अगुन सगुन समझै नर तन॥

संसार में कोई २ आदमी है जो इस लाइन का जानने वाला है। मैं इन सन्तों की वाणियों को समझने के लिए मर गया। कि क्या लिखा हुआ है। मैं तो राम को मिलने निकला था। उन्होंने कहा कि राम मन वाणी वा बुद्धि से परे मिलता है। मैं परे नहीं निकल सकता था। यह लिखा हुआ था कि गुरु की सेवा करो। जो मुझसे हो सका मैंने किया। गुरु ने जब यह देखा कि यह मूर्ख है और इसकी समझ में नहीं आता तो यह काम दे दिया और कहा कि तुझे गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा अब तुम लोगों की दया से मैंने इस भेद को पाया कि ये जितने खेल होते हैं

ये तुम्हारे अपने ही मन का नक्शा है और बाहर से कोई नहीं आता। सब फिजूल बातें हैं। तुम्हारा अपना आत्मा है मगर हर धर्म और हर गुरु ने बातें बना बना कर हमें मूर्ख बना कर अपने जाल में फँसाया है। मैं तो आप कहता हूँ कि मैं समय सन्त सतगुरु हूँ। आपको सचाई और भेद बताये जाता हूँ। ये जितने फिसाद होते हैं ये क्यों होते हैं? क्योंकि अज्ञान था। मुसलमान समझते हैं कि उनकी सहायता हजरतअली और मुहम्मद करता है, कहते हैं राम सहायता करता हैं, पंथ वाले कहते हैं कि गुरु सहायता करता है। कोई नानक पँथी बन गया, कोई दादू पंथी, कोई राधास्वामी होगया, कोई होशियारपुरिया बन गया। यह क्या है? यही तो भ्रम है। क्योंकि मेरे जिम्मे यह कर्तव्य और ग्रह हैं। मैंने यह काम करना था। इसलिए मैं विवश होकर यह काम करता हूं। मैं जानता भी हूँ कि कौन सुनता है कोई नहीं सुनता। तो मैं समझता हूं कि मैंने गलती खाई है। जिसके कर्म में ठीक होना है वह ठीक होगा। इसलिए दाता ने कहा है कि कोई कोई सन्तमत का अधिकारी होता है जब नहीं होते—

राधास्वामी परमदयाला, शब्द नाव लेकर आये।
हाथ पकड़ कर सबहि बिठाया, तट के निकट खींच लाये॥

शब्द योग में क्या नई चीज है? जो शब्द अपने अन्तर सुरत से सुना जाता है वहां मन नही होता। यह घण्टा, संख ओं, ररंग सारंग ये सब मन मन के शब्द हैं। चौदह लोक तक मन जाता है। इनसे लाभ होगा। ऐसा नहीं कि लाभ नहीं होगा मगर वह करेगा। समय आने पर वह गिर जायेगा जैसे मैंने आपको अपने बारे में बताया कि मैंने बीनें सुनीं। क्या मैं फिर घर में नहीं फँसा? मैं गृहस्थ में फँसा। इसलिए सार शब्द। वह कब आयेगा अब मुझे उस सार शब्द का पता लगा। जब मैं मन के विचारों को छोड़ कर आगे जाता हूँ। उस अवस्था में जो शब्द होता है और जो चेतनता होती है उसका नाम सार शब्द है। सन्तों का वह सारशब्द है।

गृहस्थियों को नाम दिया जाता है वह उनके मन को स्थिर करने और नेक बनने के लिए दिया जाता है। सब से पहले हर गृहस्थी को नेक और

अच्छे विचार अपनाने चाहिए घरों में शान्ति, प्रेम और स्नेह से रहो। जिस घर में कलह है वहां कभीं सुख नहीं। हमने खूब देखा—

घर घर देखा एक ही लेख, क्या पंडित क्या काजी शेखा।

जिस घर में सास और बहू का आपस में द्वेष है, बाप बेटे का द्वेष है वहाँ सुख नहीं, अब आपने देखना देश में क्या होता है ये पार्टियां एक दूसरे के विरुद्ध हैं। यह क्या है ? यह—

'आपत काले विपरीत बुद्धि' जब मुसीबत का समय आता है तो आदमी की बुद्धि भी चली जाती है। जब दुख आना होता है तो बड़े-बड़े बुद्धिमान फेल होजाते हैं। रामचन्द्र जी को भी पता न लगा कि यह मारीच है और धोखा है। इस समय आपतकाल आया हुआ है। केवल भारतवर्ष पर नहीं बल्कि सारे संसार पर और मुझे तो डर है कि शायद दो चार साल में पता नहीं क्या हो जाये जब मैं यह बात कहता हूं तब मैं सोचता हूं कि फकीरचन्द ! क्या तू गप तो नहीं मारता ? मैं गप नहीं मारता। दो गुण दो बराबर है चार के। जो कुछ हम सोचते और विचारते हैं उसका प्रभाव हम पर अवश्य होगा। जब स्वप्न के विचारों का हम पर प्रभाव होता है तो जो कुछ हम जाग्रत में सोचते हैं उससे बचकर कहाँ जाओगे। जिस बात को मैंने स्वयं आजमाया है वह मैं कहता हूँ। मेरे पास मेरे मिलने वालों के ऐसे ऐसे उदाहरण हैं जहां उनके घरों में शत्रुता थी। पहले उन्हे कहता था कि तुम्हारी हानि होगी। उनकी हानि हुई। शत्रुता, झगड़ा, फिसाद रागद्वेष के जो विचार उठते हैं उनका प्रभाव ज्ञातव्य होगा अवश्य तबाही होगी, कोई नहीं रोक सकता। जो कुछ तुम सोचोगे वह होगा। इसलिए मैं गृहस्थियों को बार बार कहता हूं कि घरों में शान्ति रखो और विषय विकार कम कमाओ जीवन बिषय भोगने के लिए नहीं है। मेरा भाव यह नहीं कि विवाह न हो मगर (Uncalled for children) संतान पैदा मत करो। यह महादोष और महापाप है। मैं आप लोगों का उपकार मानता हूँ कि आप आजाते हैं और मुझे अपना कर्म काटने के लिए सहारा बन जाते हैं। मैंने आपको सार का सार बता दिया। अगर तुम्हें मेरी बात में कोई सचाई दिखाई देती है तो उस पर अमल करो और अपना जन्म बनाओ। सब को राधास्वामी।